पत्र 1

Published by the Comic Bible Society, LLC
Copyright © 2021

Kingstone Comics maintains copyright to this comic book as provided by United States copyright law.

Print and digital copies of this version may be freely distributed without penalty under a Creative Commons license.

रोमियो
रोमी साम्राज्य की राजधानी और सबसे प्रमुख शहर, रोम था।
कुछ लोग जो पिन्तेकुस्त के दिन परिवर्तित हुए थे उन्होंने संभवतःरोम में कलीसिया की स्थापना की थी।
१ प्रेरितों के काम २:१०
पौलुस कभी रोम नहीं गया था और स्पेन जाते समय ऐसा करने की योजना बनाई थी।
उसने यह पत्री गलत धर्म-सिद्धांत को ठीक करने के लिए नहीं लिखी थी क्योंकि कलीसिया बाइबल की दृष्टि से सही थी, लेकिन इस कलीसिया को, सभी कलीसियाओं की तरह, सही धर्म-सैद्धांतिक निर्देश की आवश्यकता थी।
उसका इरादा रोम के विश्वासियों को अनुग्रह के सुसमाचार की शिक्षा देना था जिन्होंने कभी भी प्रेरिताई सम्बंधी निर्देश प्राप्त नहीं किया था।
इस पत्री में वह वर्णन करता है कि कैसे पृथ्वी पर मसीह का समय यहूदी इतिहास में और मानवता के भविष्य के लिए परमेश्वर के कार्य से जुड़ता है।
तिरितयुस नाम शास्त्री को निर्देशित, रोमियो १००० शब्दों की प्रेरितों की सबसे लम्बी पत्री है।

आध्यात्मिक अगुवाई
मैं जहाँ भी जाता हूँ तुम्हारे विश्वास के विषय में सुना - इसकी दुनिया भर में चर्चा है।
मैं इस अच्छी सूचना के लिए और तुममें से प्रत्येक के लिए यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ।
मैं तुमसे मिलने के अवसर के लिए निरंतर प्रार्थना करता रहता हूँ।
मैं अपने विश्वास को तुम्हारे साथ बाँटना चाहता हूँ और तुम्हारे द्वारा प्रोत्साहित होना चाहता हूँ।
क्योंकि मैं मसीह के इस सुसमाचार के विषय शर्मिंदा नहीं हूँ - यह परमेश्वर के उद्धार का मार्ग है।
यह संदेश पहले यहूदियों को सुनाया गया था, परन्तु इसी तरह अब हर एक परमेश्वर के पास आने के लिए आमंत्रित है।
पाप के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध
परन्तु परमेश्वर स्वर्ग से अपना क्रोध उन सब पापी मनुष्यों पर प्रगट करता है जो सत्य को दूर कर देते हैं।
उसने अपनी सच्चाई उनके मनों में डाल दी है ताकि जब वे न्याय के दिन परमेश्वर के सामने खड़े हों तो उनके पास कोई बहाना न रहे।
लेकिन उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया।
उन्होंने महिमामय परमेश्वर की आराधना करने के बजाय लकड़ी और पत्थर लेकर अपने लिए मूरतें बना लीं।

इस प्रकार वे नीच और पापमय कार्य करने लगे।
उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई के विषय में जानते हुए उस पर विश्वास करने के बजाय; जान बूझकर झूठ पर विश्वास करना चुना।
इसलिए परमेश्वर ने उन्हें इन बुरे कार्यों को करने दिया - यहाँ तक कि उनकी स्त्रियाँ भी परमेश्वर की स्वाभाविक योजना के विरुद्ध हो गईं।
और परमेश्वर की योजना को नजर-अंदाज करके पुरुषों ने पुरुषों के साथ शर्मनाक काम किए।
जब उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया, तो उन्हें हर उस बुरे काम को करने के लिए छोड़ दिया जिसके बारे में वे विचार करते थे।
वे हर प्रकार के पाप से भरे हुए हैं - लालच, नफरत, ईर्ष्या, हत्या, लड़ाई, झूठ, कड़वाहट और चुगलखोरी।
वे परमेश्वर से घृणा करने वाले, ढीठ, घमंडी, पाप करने के नए तरीकों के विषय में सोचते रहनेवाले हैं, और अपने माता-पिता की आज्ञा ना माननेवाले हैं।
इनके कारण परमेश्वर के मृत्युदण्ड के विषय में वे जानते थे लेकिन फिर भी उन्होंने वैसा ही किया।

रोमियो १:२४-३२

ईश्वरीय न्याय के सिद्धांत
तू यह कहता होगा, “कितने भद्दे लोग हैं!” लेकिन एक क्षण रुक! तू भी उतना ही बुरा है।
जब तू कहता है कि वे दुष्ट हैं और उन्हें दण्ड मिलना चाहिए, तो तू खुद को भी दोषी ठहरा रहा है, क्योंकि तू भी ऐसे ही काम करता है।
परमेश्वर, न्याय के समय, ऐसे हर व्यक्ति को दण्ड देगा जो इस तरह के कार्य करता है।
क्या तुझे लगता है कि परमेश्वर दूसरों का न्याय करेगा और इस तरह के कार्यों को करने के लिए उन्हें दोषी उन्हें ठहराएगा और जबकि तू भी इसी तरह के कार्य करता है तो क्या तुझे अनदेखा करेगा?
क्या तुझे नहीं पता कि परमेश्वर कितना धैर्यवान है?
क्या अब तक उसने तुझे दण्ड दिए बिना रहने दिया - उसकी दयालुता तुम्हें पश्चाताप की ओर अगुवाई करने के लिए होती है।
पाप की सार्वभौमिकता
तो क्या हम यहूदी दूसरों से बेहतर हैं? नहीं, बिलकुल नहीं, क्योंकि हम पहले ही प्रकट कर चुके हैं कि चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, सभी मनुष्य समान रूप से पापी हैं।
सभी भटक गए हैं; सब गलत हो गया है। कोई भी कहीं भी सही काम नहीं कर रहा।

सिर्फ विश्वास के द्वारा छुटकारा
लेकिन अब परमेश्वर ने हमें दिखाया है कि हम “भले होने” के द्वारा और उसके नियमों का पालन करने की कोशिश करके भी स्वर्ग नहीं जा सकते हैं, परन्तु केवल एक नये मार्ग के द्वारा।
अब परमेश्वर हमें “दोष रहित” ठहराता है यदि हम यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं की वह हमें हमारे पापों से छुड़ाता है।
और हम सभी इसी तरह मसीह के पास आने से उद्धार पा सकते हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं या हम कैसे थे क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर के महिमामय विचार से वंचित हैं।
उद्धार की सुरक्षा
इसलिए अब, जबकि हम उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरे हैं, तो यीशु मसीह ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके कारण से हम उसके साथ मेल-मिलाप कर सकते हैं।
जब हम पूरी तरह से असहाय थे, तो मसीह सही समय पर आया और हमारे लिए मरा।
अब हम अपने नए रिश्ते में आनन्दित होते हैं यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और हमें परमेश्वर का मित्र बना दिया।
रोमियो ३:२१ – ५:११

आदम के पाप का स्थानांतरण
जब आदम ने पाप किया, तो पाप पूरी मनुष्यजाति में प्रवेश कर गया।
उसके पाप करने के द्वारा मृत्यु ने सारी दुनिया में राज्य किया, और सभी पापी ठहरे।
आदम, अपने पाप के द्वारा बहुतों पर मृत्यु ले आया।
लेकिन एक व्यक्ति, यीशु मसीह, परमेश्वर की दया के द्वारा बहुतों पर क्षमा ले आया।
पवित्रीकरण
क्या हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि परमेश्वर हम पर और अधिक अनुग्रह दिखा सके?
कदापि नहीं! क्योंकि जब हम मसीही बने, और यीशु मसीह के साथ सहभागी होने के लिए बपतिस्मा लिया, तो पाप की शक्ति हमारे ऊपर से हट गई।
तुम्हारा पाप-चाहनेवाला स्वभाव बपतिस्मा के द्वारा मृत्यु में उसके साथ गाड़ा गया और जिस तरह से पिता परमेश्वर ने उसे फिर से जिलाया तुम्हें भी एक नया जीवन दिया गया।
जैसे तुम सब प्रकार के पापों के दास हुआ करते थे, वैसे ही अब तुम खुद को उन सभी के दास होने के लिए दे दो जो सत्य और पवित्र है।
क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन है।
रोमियो ५:१२ ६:२०

क्या तुम नहीं जानते कि जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो व्यवस्था का अधिकार नहीं रह जाता है?
जब एक स्त्री शादी करती है, तो वह अपने पति से तब तक बंधी रहती है जब तक कि वह जीवित रहता है लेकिन अगर वह मर जाता है तो वह उसकी अधीनता में बंधी नहीं रहती है।
तुम्हारा “पति,” यहूदी व्यवस्था हुआ करता था; लेकिन तुम क्रूस पर मसीह के साथ “मर गए” और अब “व्यवस्था के अधीन” नहीं रहे।
तुम फिर जी उठे जब मसीह जी उठा और अब तुम एक नए मनुष्य हो।
व्यवस्था अच्छी है समस्या व्यवस्था के साथ नहीं है परन्तु मेरे साथ है - क्योंकि मैं गुलाम के समान पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।
मैं सचमुच वही करना चाहता हूँ जो उचित है - लेकिन मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता - जिन बातों से मुझे घृणा है।
मेरा नया जीवन मुझे भलाई करने के लिए कहता है, लेकिन मेरे अंदर का पुराना स्वभाव अभी भी पाप करना पसंद करता है।
अब कोई दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि यीशु मसीह ने मुझे छुड़ा लिया है।
क्योंकि मैं निश्चय जान गया हूँ, कि कोई भी वस्तु हमें उसके प्रेम से कभी अलग नहीं कर सकती।
न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न दुष्टात्माएँ, न भय, न चिंता, न ऊँचाई या न ही गहराई, हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा प्रदर्शित परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकते।

प्रभुत्व-सम्पन्न चुनाव
हे इस्राएल के लोगों - मैं मसीह में तुम्हारे पास आने की कितनी लालसा करता हूँ!
मैं हमेशा के लिए शापित होने को तैयार रहूँगा यदि वह तुम्हें बचाएगा।
परमेश्वर ने तुम्हें बहुत कुछ दिया है - लेकिन फिर भी तुम उसकी बात नहीं मानते हो।
उसने तुम्हें अपनी चुनी हुई प्रजा ठहराया है और महिमा के बादल के साथ तुम्हारी अगुवाई की।
उसने तुम्हें अपनी आज्ञाएँ दीं और मसीह स्वयं तुममें से एक था जहाँ तक उसके मानवीय स्वभाव का संबंध है, एक यहूदी।
इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने ऊंचे स्वर से कहा...
हालाँकि इस्राएलियों की संख्या समुद्र के किनारे की रेत के समान हो - केवल शेष लोग ही बचेंगे।
परमेश्वर ने अन्यजातियों को विश्वास के द्वारा मुक्त होने का अवसर दिया है।
यहूदी सफल नहीं हुए क्योंकि वे विश्वास पर निर्भर रहने के बजाय व्यवस्था का पालन करके खुद को बचाने की कोशिश कर रहे थे।
परमेश्वर ने अपने उन लोगों को अस्वीकार नहीं किया जिन्हें उसने शुरू से ही चुन लिया था।
उसका उद्देश्य अन्यजातियों के लिए अपने उद्धार को उपलब्ध कराना था, और फिर यहूदी स्वयं के लिए परमेश्वर के उद्धार की इच्छा करने लगेंगे।
रोमियो ९-११

आत्मिक वरदान
मैं तुम से विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को चढ़ाओ, जो पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ हो।
परमेश्वर ने तुम्हें जो विश्वास दिया है, उसी के अनुसार अपने विषय में गंभीरता से विचार करो।
जैसे हमारे शरीर में बहुत सारे अंग होते हैं, वैसे ही हम सभी मसीह की देह के अंग हैं जो अलग-अलग कार्य के द्वारा देह को सम्पूर्ण बनाते हैं।
यदि परमेश्वर ने तुमको भविष्यद्वाणी करने की सामर्थ्य दी है - तो जो विश्वास वह देता है उसके साथ भविष्यद्वाणी कर।
यदि सेवा कर रहे हो - तो अच्छी तरह से दूसरों की सेवा करो।
यदि तुम शिक्षा देनेवाले हो, तो सिखाने का कार्य अच्छी तरह करो।
यदि तुम एक उपदेशक हो तो प्रभावशाली और उपयोगी उपदेश दो।
यदि परमेश्वर ने तुमको धन दिया है तो - दूसरों के प्रति उदार रहो।
यदि परमेश्वर ने तुमको उत्तरदायित्व सौंपा है तो, उस जिम्मेदारी को गंभीरता से लो।
यदि कोई दया दिखाए तो, आनंदपूर्वक दिखाए।

व्यावहारिक धार्मिकता
सिर्फ दिखावा न करो कि तुम दूसरों से प्यार करते होः सचमुच उनसे प्यार करो।
अपने काम में कभी भी आलस न करो, बल्कि उत्साहपूर्वक प्रभु की सेवा करो।
क्लेश में धीरज रखो और हमेशा प्रार्थना में लगे रहो।
जब परमेश्वर के पवित्र लोगों को कुछ जरुरत हो, तो उसमें उनकी मदद करने वाले बनो।
इस कारण की तुम मसीही हो, यदि कोई तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करता है, तो उसे श्राप न दो; प्रार्थना करो कि परमेश्वर उसे आशीष दे।
मुख्य लोगों की आकर्षक शोभा की ओर जाने की कोशिश न करो, बल्कि दीन लोगों की संगति में प्रसन्न रहो।
बुराई के बदले कभी बुराई न करो - लोगों को तुम्हारी सच्चाई भरा व्यवहार दिखाई दे।
झगड़ा न करो पर जितना हो सके सबके साथ शांति से रहो।
ऐध९- ऐध९.
प्रिय मित्रों, कभी भी बदला मत लो। उसको परमेश्वर पर छोड़ दो, क्योंकि उस ने कहा है, कि जो उसके योग्य होगा, उसका बदला चुकाएगा।
इसके बजाय, यदि तेरा शत्रु भूखा है तो उसे खाना खिला। अगर वह प्यासा है तो उसे पानी पिला, भलाई करके बुराई को जीत ले।

रोमियो १२:९-२१

मानवीय सरकार के प्रति उत्तरदायित्व
शासकीय लोगों की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने उसे उस स्थान पर रखा है।
जो लोग कानून का पालन करने से इनकार करते हैं, वे परमेश्वर की आज्ञा मानने से इनकार करते हैं, तो दण्ड पाएंगे।
अपने करों का भुगतान किया करो ताकि सरकारी कर्मचारी तुम्हारी सेवा करने के लिए परमेश्वर के कार्य को जारी रख सकें।
हर एक का हक चुकाया करो - और जिनके लिए यह उचित है उन्हें आदर और सम्मान दो।
दूसरों के प्रति प्रेम के कर्ज को छोड़कर अपने सभी कर्ज चुकाया करो - कभी भी उस भुगतान को चुकाना समाप्त मत करो।
सभी दस आज्ञाएँ इस एक बात में पूरी हो जाती हैं कि - अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।
पवित्र जीवन जीने का दूसरा कारण यह है - हमने पहली बार विश्वास जब किया था तब अधिक अब प्रभु का आना निकट है।
अपना समय लीला-क्रीड़ा और नशे में या व्यभिचार और वासना या लड़ाई या ईर्ष्या में व्यतीत न करो।
जैसा तुमको जीवन जीना चाहिए वैसा जीने के लिए प्रभु यीशु मसीह से सहायता मांगो।

हर एक भाई का स्वागत करो जो तुम्हारे साथ संगति करना चाहता हो, भले ही वह विश्वास में कमजोर हो।
सही और गलत के बारे में अलग-अलग विचार रखकर उस पर दोष लगाने के लिए नहीं।
तुझे अपने भाई की आलोचना करने या उसे नीचा दिखाने का कोई अधिकार नहीं है।
याद रखो, हम सब न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे और परमेश्वर को अपना हिसाब देंगे।
तुझे कोई गलत काम करता हुआ तेरा भाई न देखे, इस तरह से जीने की कोशिश कर, जिससे तेरे भाई को ठोकर ना लगे।
यहाँ तक कि यदि हम विश्वास करें की इससे प्रभु को कोई फर्क नहीं पड़ता है, तब भी हम केवल खुद को खुशी का ना सोचे - हमें दूसरों के संदेह और भय पर विचार करना चाहिए।
परमेश्वर जो धीरज, स्थिरता और प्रोत्साहन देता है, तुम्हें एक दूसरे के प्रति मसीह के दृष्टिकोण के साथ - मेलमिलाप से रहने में मदद करता है।
मैं तुमसे हमारी बहन फीबे की सराहना करता हूँ जो यह पत्र दे रही है।
कलीसिया में सभी को मेरा नमस्कार देना।
एकमात्र सर्वज्ञानी परमेश्वर की महिमा यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग होती रहे!
रोमियो १४-१६

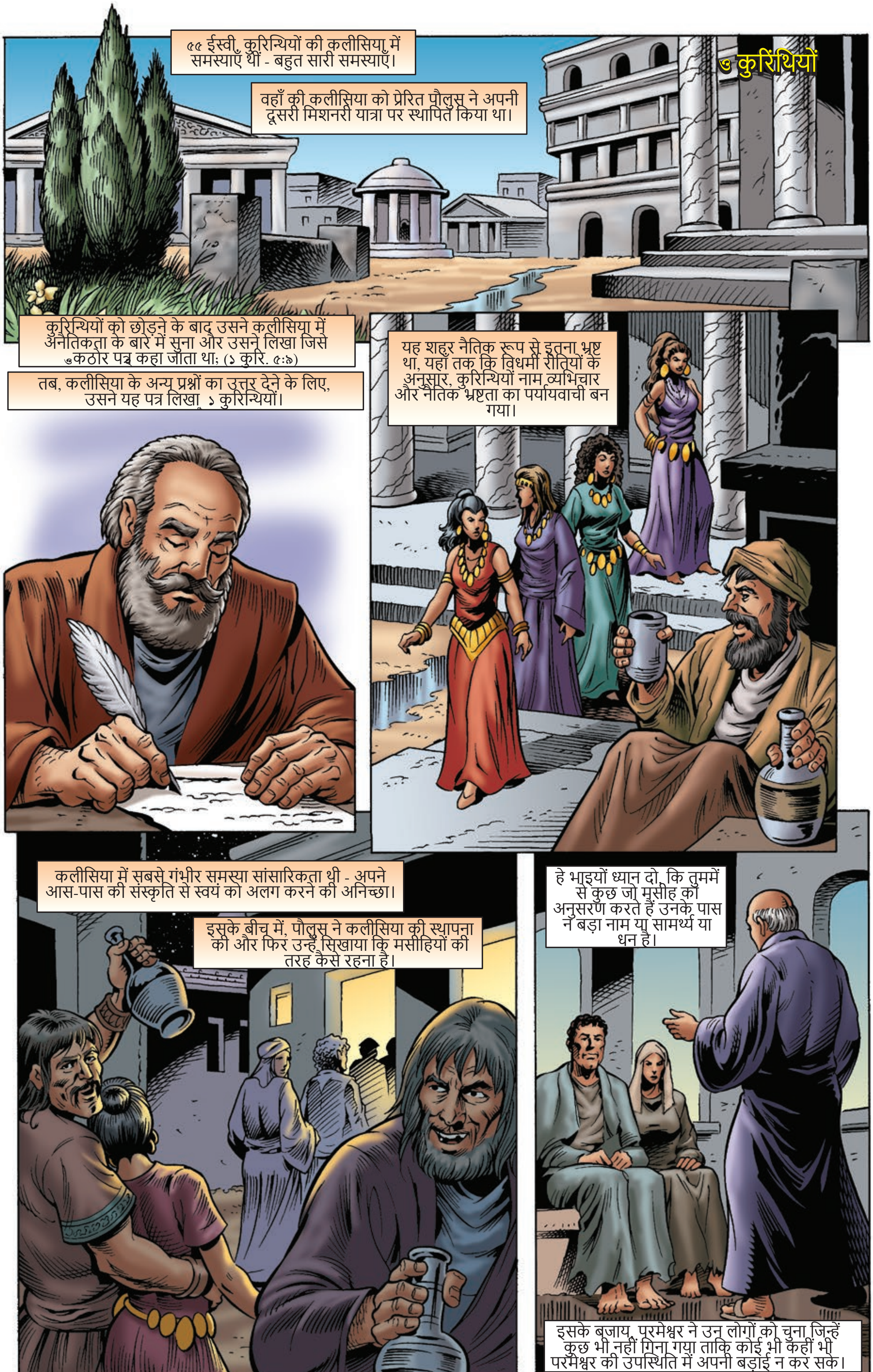
५५ ईस्वी, कुरिन्थियों की कलीसिया में समस्याएँ थीं - बहुत सारी समस्याएँ।
वहाँ की कलीसिया को प्रेरित पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर स्थापित किया था।
७ कुरिंथियों
कुरिन्थियों को छोड़ने के बाद उसने कलीसिया में अनैतिकता के बारे में सुना और उसने लिखा जिसे ७कठोर पत्र कहा जाता था; (१ कुरि. ५:९)
तब, कलीसिया के अन्य प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, उसने यह पत्र लिखा, १ कुरिन्थियों।
यह शहर नैतिक रूप से इतना भ्रष्ट था, यहाँ तक कि विधर्मी रीतियों के अनुसार, कुरिन्थियों नाम व्यभिचार और नैतिक भ्रष्टता का पर्यायवाची बन गया।
कलीसिया में सबसे गंभीर समस्या सांसारिकता थी - अपने आस-पास की संस्कृति से स्वयं को अलग करने की अनिच्छा।
इसके बीच में, पौलुस ने कलीसिया की स्थापना की और फिर उन्हें सिखाया कि मसीहियों की तरह कैसे रहना है।
हे भाइयों ध्यान दो, कि तुममें से कुछ जो मसीह का अनुसरण करते हैं उनके पास न बड़ा नाम या सामर्थ्य या धन है।
इसके बजाय, परमेश्वर ने उन लोगों को चुना जिन्हें कुछ भी नहीं गिना गया ताकि कोई भी कहीं भी परमेश्वर की उपस्थिति में अपनी बड़ाई न कर सके।

जब मैं तुम्हारे पास आया तो मैंने काल्पनिक शब्दों और प्रतिभाशाली विचारों का उपयोग नहीं किया, लेकिन सिर्फ यीशु मसीह और उसके क्रूस पर मृत्यु के विषय में बात की - ताकि तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर निर्भर हो, न कि किसी व्यक्ति के शब्दों पर।
यदि संसार के हाकिमों ने इसे समझ लिया होता, तो वे महिमामय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।
पवित्रशास्त्र क्या कहता है कि किसी भी मनुष्य ने कभी न देखा, न सुना, और न कभी कल्पना की है कि परमेश्वर ने उन लोगों के लिए कितनी अद्‌त चीजें तैयार की हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं।
जब तुम ईर्ष्या करते हो और झगड़ते हो तो तुम ऐसे लोगों की तरह व्यवहार करते हो जो प्रभु के बिल्कुल भी नहीं हैं।
इस निष्कर्ष पर तुरंत न पहुँचो कि कोई अच्छा सेवक है या नहीं।
जब प्रभु आएगा, तो वह प्रकट कर देगा कि सचमुच हमारे मनों में क्या है।
मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए नहीं, बल्कि प्रिय बालकों की तरह तुम्हें सलाह देने के लिए लिख रहा हूँ।
मेरे आदर्श का पालन करो और, जैसा मैं करता हूँ वैसा ही करो।

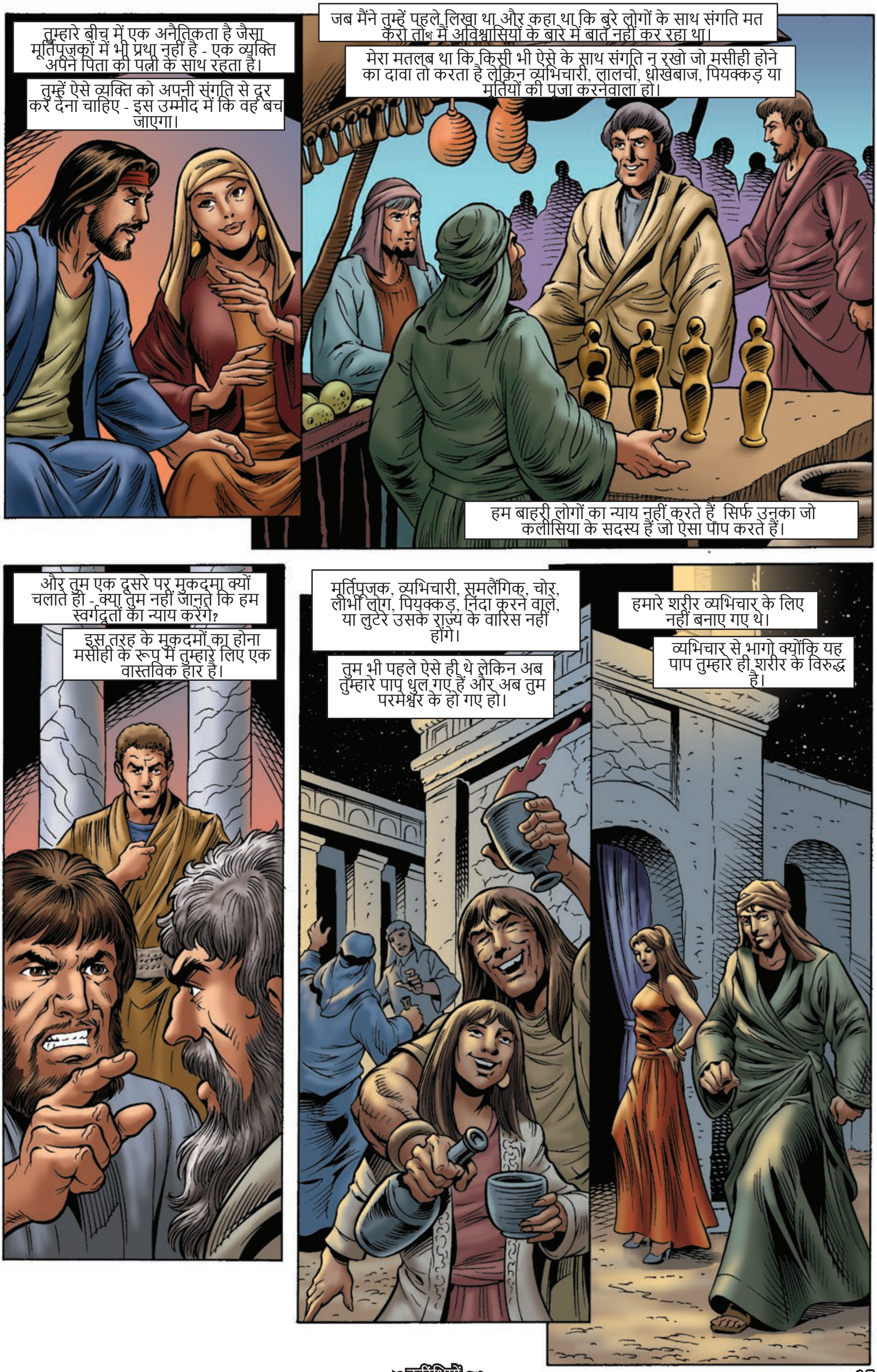

तुम्हारे बीच में एक अनैतिकता है जैसा मूर्तिपूजकों में भी प्रथा नहीं है - एक व्यक्ति अपने पिता की पत्नी के साथ रहता है।
तुम्हें ऐसे व्यक्ति को अपनी संगति से दूर कर देना चाहिए - इस उम्मीद में कि वह बच जाएगा।
जब मैंने तुम्हें पहले लिखा था और कहा था कि बुरे लोगों के साथ संगति मत करो तो॰ मैं अविश्वासियों के बारे में बात नहीं कर रहा था।
मेरा मतलब था कि किसी भी ऐसे के साथ संगति न रखो जो मसीही होने का दावा तो करता है लेकिन व्यभिचारी, लालची, धोखेबाज, पियक्कड़ या मूर्तियों की पूजा करनेवाला हो।
हम बाहरी लोगों का न्याय नहीं करते हैं सिर्फ उनका जो कलीसिया के सदस्य हैं जो ऐसा पाप करते हैं।
और तुम एक दूसरे पर मुकदमा क्यों चलाते हो - क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?
इस तरह के मुकदमों का होना मसीही के रूप में तुम्हारे लिए एक वास्तविक हार है।
मूर्तिपूजक, व्यभिचारी, समलैंगिक, चोर, लोभी लोग, पियक्कड़, निंदा करने वाले, या लुटेरे उसके राज्य के वारिस नहीं होंगे।
तुम भी पहले ऐसे ही थे लेकिन अब तुम्हारे पाप धुल गए हैं और अब तुम परमेश्वर के हो गए हो।
हमारे शरीर व्यभिचार के लिए नहीं बनाए गए थे।
व्यभिचार से भागो क्योंकि यह पाप तुम्हारे ही शरीर के विरुद्ध है।

विवाह पर तुम्हारे सवालों के विषय में -- सामन्यतःशादी करना सबसे अच्छा होता है, क्योंकि फिर तुम पाप में पड़ सकते हो।
यदि किसी मसीही भाई की पत्नी, जो मसीही न हो, परन्तु वह उसके साथ रहना चाहती है, तो वह उसे न छोड़ें और न ही तलाक दे।
और उसी तरह, एक मसीही स्त्री का पति है जो मसीही नहीं है, तो वह भी उसे न छोड़ें।
यदि परिवार में अलगाव होता है, तो बच्चे कभी भी प्रभु को नहीं जान पाएंगे - जबकि एक संगठित परिवार के द्वारा बच्चों का उद्धार हो सकता है।
पत्नी अपने पति के साथ बंधी हुई है जब तक वह जीवित है; यदि उसका पति मर जाता है, तो वह फिर से शादी कर सकती है, लेकिन सिर्फ वह एक मसीही व्यक्ति से शादी कर सकती है।
मूर्तियों को समर्पित की जानेवाली भोजन वस्तु के विषय में तुम्हारे सवाल पर - हम जानते हैं कि मूर्ति कोई ईश्वर नहीं है।
सिर्फ एक ही परमेश्वर पिता है, जिसने सब कुछ बनाया और एक ही प्रभु है अर्थात यीशु मसीह, जिसने सब कुछ बनाया और हमें जीवन दिया।
हालाँकि, जैसा कि कुछ मसीही, मूर्तियों को जीवित मानते हैं, इसलिए जब वे ऐसा भोजन खाते हैं तो यह उनकी अंतरात्मा को ठेस पहुँचाता है।
सावधान रहो अपनी स्वतंत्रता को इस तरह के खाने-पीने के लिए उपयोग न करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी ऐसे भाई को पाप में डालो जिसका विवेक तुझसे कमजोर है।

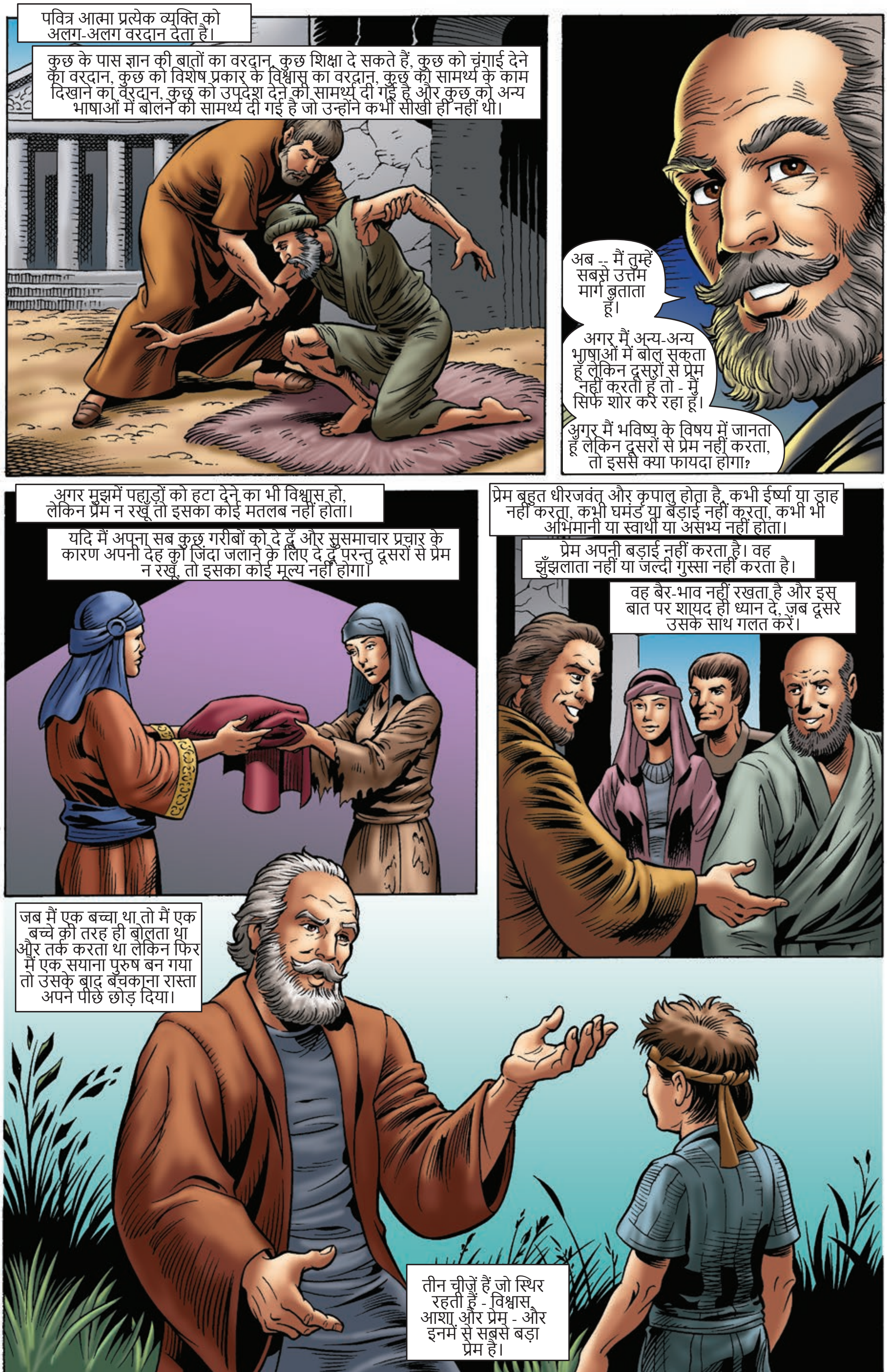
पवित्र आत्मा प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग वरदान देता है।
कुछ के पास ज्ञान की बातों का वरदान, कुछ शिक्षा दे सकते हैं, कुछ को चंगाई देने का वरदान, कुछ को विशेष प्रकार के विश्वास का वरदान, कुछ को सामर्थ्य के काम दिखाने का वरदान, कुछ को उपदेश देने की सामर्थ्य दी गई है और कुछ को अन्य भाषाओं में बोलने की सामर्थ्य दी गई है जो उन्होंने कभी सीखी ही नहीं थी।
अब -- मैं तुम्हें सबसे उत्तम मार्ग बताता हूँ।
अगर मैं अन्य-अन्य भाषाओं में बोल सकता हूँ लेकिन दूसरों से प्रेम नहीं करता हूँ तो - मैं सिर्फ शोर कर रहा हूँ।
अगर मैं भविष्य के विषय में जानता हूँ लेकिन दूसरों से प्रेम नहीं करता, तो इससे क्या फायदा होगा?
अगर मुझमें पहाड़ों को हटा देने का भी विश्वास हो, लेकिन प्रेम न रखूँ तो इसका कोई मतलब नहीं होता।
यदि मैं अपना सब कुछ गरीबों को दे दूँ और सुसमाचार प्रचार के कारण अपनी देह को जिंदा जलाने के लिए दे दूँ परन्तु दूसरों से प्रेम न रखूँ, तो इसका कोई मूल्य नहीं होगा।
प्रेम बहुत धीरजवंत और कृपालु होता है, कभी ईर्ष्या या डाह नहीं करता, कभी घमंड या बड़ाई नहीं करता, कभी भी अभिमानी या स्वार्थी या असभ्य नहीं होता।
प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है। वह झुँझलाता नहीं या जल्दी गुस्सा नहीं करता है।
वह बैर-भाव नहीं रखता है और इस बात पर शायद ही ध्यान दे, जब दूसरे उसके साथ गलत करें।
जब मैं एक बच्चा था तो मैं एक बच्चे की तरह ही बोलता था और तर्क करता था लेकिन फिर मैं एक सयाना पुरुष बन गया तो उसके बाद बचकाना रास्ता अपने पीछे छोड़ दिया।
तीन चीज़ें हैं जो स्थिर रहती हैं - विश्वास, आशा और प्रेम - और इनमें से सबसे बड़ा प्रेम है।

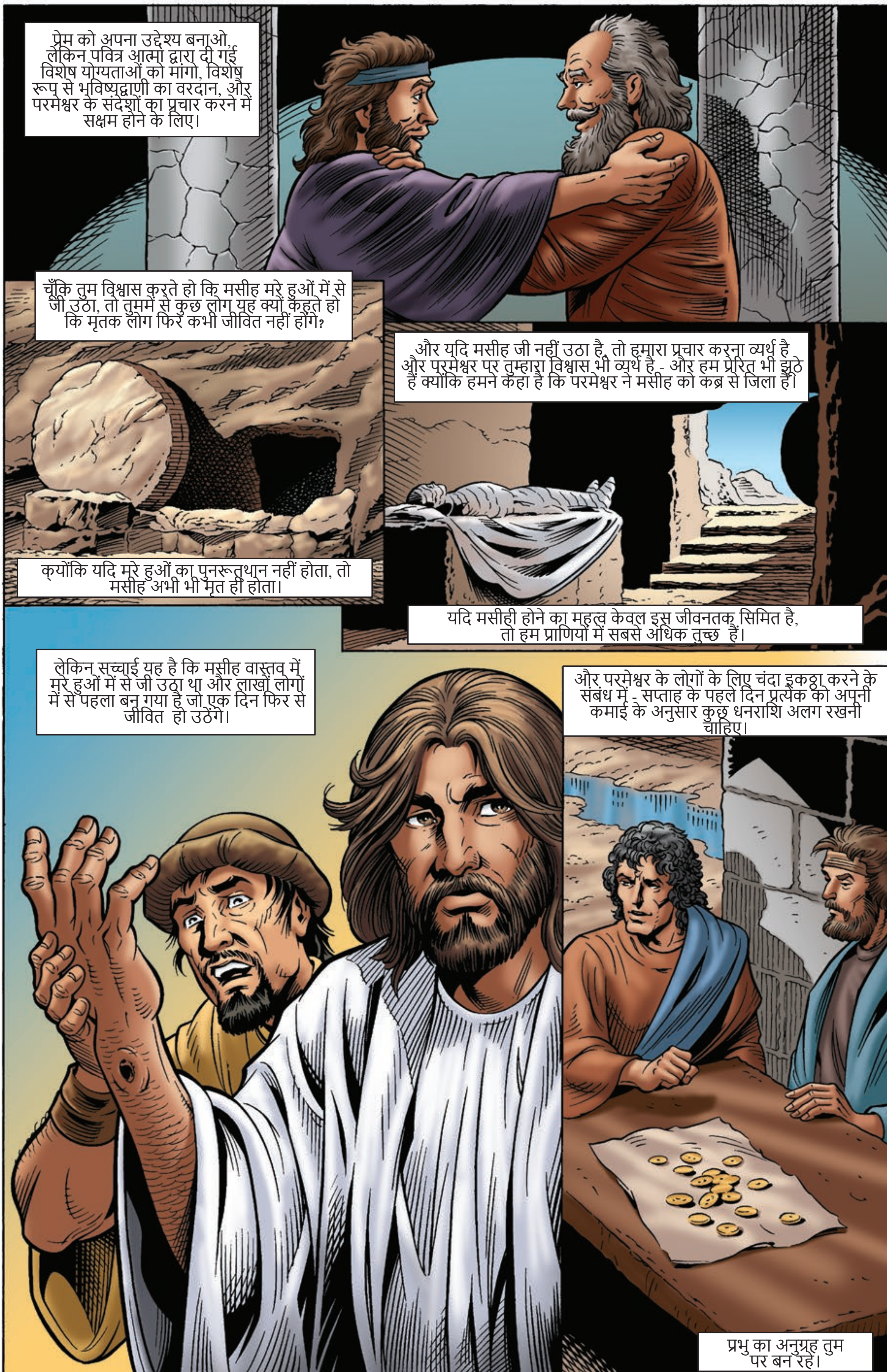
प्रेम को अपना उद्देश्य बनाओ, लेकिन पवित्र आत्मा द्वारा दी गई विशेष योग्यताओं को मांगो, विशेष रूप से भविष्यद्वाणी का वरदान, और परमेश्वर के संदेशों का प्रचार करने में सक्षम होने के लिए।
चूँकि तुम विश्वास करते हो कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुममें से कुछ लोग यह क्यों कहते हो कि मृतक लोग फिर कभी जीवित नहीं होंगे?
क्योंकि यदि मरे हुओं का पुनरूत्थान नहीं होता, तो मसीह अभी भी मृत ही होता।
और यदि मसीह जी नहीं उठा है, तो हमारा प्रचार करना व्यर्थ है और परमेश्वर पर तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है - और हम प्रेरित भी झूठे हैं क्योंकि हमने कहा है कि परमेश्वर ने मसीह को कब्र से जिला है।
यदि मसीही होने का महत्व केवल इस जीवनतक सिमित है, तो हम प्राणियों में सबसे अधिक तुच्छ हैं।
लेकिन सच्चाई यह है कि मसीह वास्तव में मरे हुओं में से जी उठा था और लाखों लोगों में से पहला बन गया है जो एक दिन फिर से जीवित हो उठेंगे।
और परमेश्वर के लोगों के लिए चंदा इकठ्ठा करने के संबंध में - सप्ताह के पहले दिन प्रत्येक को अपनी कमाई के अनुसार कुछ धनराशि अलग रखनी चाहिए।
प्रभु का अनुग्रह तुम पर बना रहे।

कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखी गई अपनी दूसरी पत्री में पौलुस को यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि बहुत संख्या में लोगों ने प्रतिक्रिया दी और अपने विद्रोह से पश्चाताप किया।
हमारे पास कितना अद्‌त परमेश्वर है - जो हमें हमारी परीक्षाओं में सांत्वना देता है और दृढ़ बनाता है।
वह ऐसा इसलिए करता है ताकि जब दूसरे लोग क्लेश में हों तो हम उन्हें भी वही सांत्वना दे सकें जो परमेश्वर ने हमें दी है।
याद रखना कि जिस व्यक्ति के विषय में मैंने लिखा - तुम्हारी एकजुट अस्वीकृति से उसे बहुत दुःख हुआ है।
लेकिन अब उसे क्षमा करने और उसे शांति देने का समय है - अन्यथा वह इतना निराश हो सकता है कि वह उस दुःख से बाहर नहीं निकल पाएगा।
वह परमेश्वर ही है, जो अपनी दया से, हमें उसका सुसमाचार दूसरों को बताने का यह अद्‌त कार्य सौंपा है, और इसलिए हम कभी हार नहीं मानते हैं।
यदि सुसमाचार किसी के लिए छिपा हुआ है, तो इसका कारण यह है कि शैतान, जो इस दुष्ट संसार का ईश्वर है, उसने उनकी आँखों को बन्द कर दिया है, कि वह सुसमाचार के तेजोमय प्रकाश को देखने में असमर्थ है।
लेकिन यह अनमोल खजाना हमारे निर्बल शरीरों के नाशवान पात्र में इसलिए रखा हुआ है ताकि हर कोई यह देख सके कि महिमामय सामर्थ्य परमेश्वर की है हमारी नहीं।
हम हर तरफ से क्लेशों से दबे हुए तो हैं, लेकिन कुचले और टूटे नहीं।

क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारे शरीर का यह तम्बू समान घर गिराया जाएगा, तो हमारे पास स्वर्ग में नए शरीर होंगे।
क्योंकि हम सभी को अपने पार्थिव शरीर में किए गए भले या बुरे कामों के लिए मसीह के सामने खड़ा होना पड़ेगा।
परमेश्वर ने हमें लोगों को उसके साथ मेल-मिलाप करने की विनती करने के लिए विशेष-अधिकार दिया है।
क्योंकि परमेश्वर मसीह में था, और संसार को स्वयं में पुनः स्थापित कर रहा था, और लोगों के पापों को उनके विरुद्ध में नहीं गिनता, यही हमारा अदत संदेश है।
हम इस तरह से जीवन बिताने की कोशिश करते हैं कि कोई भी कभी भी परमेश्वर को खोजने से पीछे न रहे - ताकि कोई भी हममें दोष पाकर प्रभु पर दोष न लगाए।
हर बात में हम यह प्रगट करने की कोशिश करते हैं कि हम परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं।
हम धैर्यपूर्वक हर तरह की पीड़ा और संकटों और क्लेशों को सहन करते हैं।
हमें पीटा गया, जेल में डाल दिया गया, क्रोधित भीड़ का सामना करना पड़ा, परिश्रम के साथ काम करने में, रातों में पहरा देते हुए जागते रहने और उपवास के कारण दुर्बलता में।

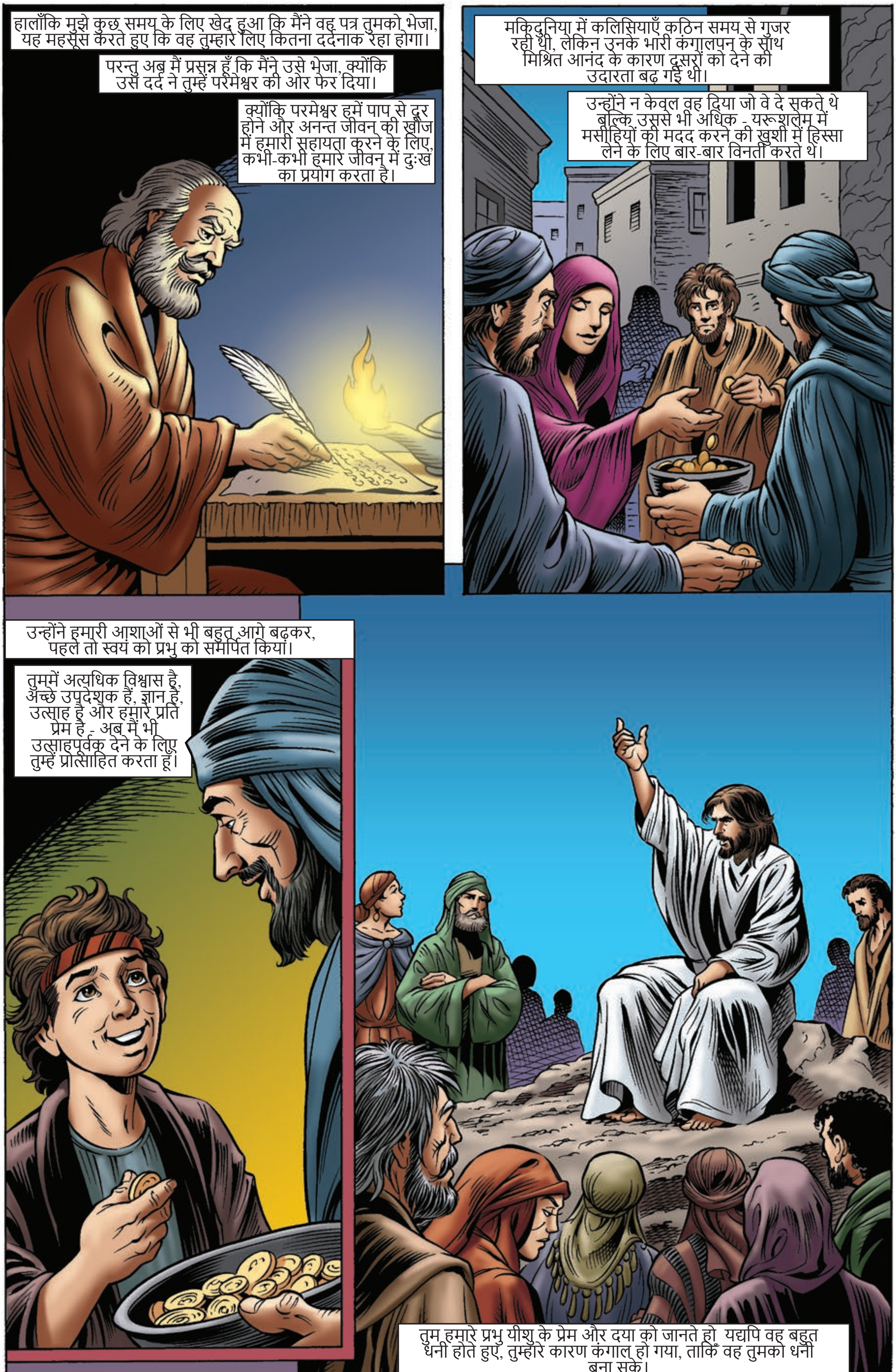
हालाँकि मुझे कुछ समय के लिए खेद हुआ कि मैंने वह पत्र तुमको भेजा, यह महसूस करते हुए कि वह तुम्हारे लिए कितना दर्दनाक रहा होगा।
परन्तु अब मैं प्रसन्न हूँ कि मैंने उसे भेजा, क्योंकि उस दर्द ने तुम्हें परमेश्वर की ओर फेर दिया।
क्योंकि परमेश्वर हमें पाप से दूर होने और अनन्त जीवन की खोज में हमारी सहायता करने के लिए, कभी-कभी हमारे जीवन में दुःख का प्रयोग करता है।
मकिदुनिया में कलिसियाएँ कठिन समय से गुजर रही थी, लेकिन उनके भारी कंगालपन के साथ मिश्रित आनंद के कारण दूसरों को देने की उदारता बढ़ गई थी।
उन्होंने न केवल वह दिया जो वे दे सकते थे बल्कि उससे भी अधिक - यरूशलेम में मसीहियों की मदद करने की खुशी में हिस्सा लेने के लिए बार-बार विनती करते थे।
उन्होंने हमारी आशाओं से भी बहुत आगे बढ़कर, पहले तो स्वयं को प्रभु को समर्पित किया।
तुममें अत्यधिक विश्वास है, अच्छे उपदेशक हैं, ज्ञान है, उत्साह है और हमारे प्रति प्रेम है - अब मैं भी उत्साहपूर्वक देने के लिए तुम्हें प्रोत्साहित करता हूँ।
तुम हमारे प्रभु यीशु के प्रेम और दया को जानते हो, यद्यपि वह बहुत धनी होते हुए, तुम्हारे कारण कंगाल हो गया, ताकि वह तुमको धनी बना सके।

मैं इस बात से मकिदुनिया के लोगों के आगे घमण्ड करता था की तुम एक वर्ष पहले से ही भेंट भेजने को तैयार थे।
यह तुम्हारा उत्साह था जिसने उन्हें मदद करने के लिए प्रेरित किया. इसलिए मैं यह सुनिश्चित करने के लिए पुरुषों को आगे भेज रहा हूँ कि तुम्हारी भेंटें तैयार हैं।
लेकिन यह याद रखो- अगर तुम थोड़ा दोगे तो तुम्हें थोड़ा प्राप्त होगा सभी को अपना मन तैयार करना चाहिए।
किसी को भी उससे अधिक देने के लिए मजबूर न करो, जितना कि वह वास्तव में चाहता है, क्योंकि खुशी से देने वाले से परमेश्वर प्रेम करता है।
परमेश्वर तुम्हें बहुत कुछ देगा ताकि तुम बहुत कुछ दे सको।
इसलिए तुम्हारे द्वारा दी गई भेंटों से दो अच्छी चीजें होती हैं - जरूरतमंदों की मदद की जाती है, और वे परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भर जाते हैं।
यह सच है कि मैं एक साधारण, और निर्बल इंसान हूँ, लेकिन मैं अपनी लड़ाई जीतने के लिए मानवीय योजनाओं और तरीकों का इस्तेमाल नहीं करता।
मैं परमेश्वर के शक्तिशाली हथियारों का उपयोग शैतान के गढ़ों और हर उस दीवार को गिराने के लिए करता हूँ जो लोगों को उसे ढूंढने से रोकती है।

मेरे साथ धीरज रखो - मुझे डर है कि ये झूठे शिक्षक हमारे परमेश्वर के प्रति तुम्हारी शुद्ध और कोमल भक्ति से दूर हो सकते हैं, जैसे अदन के बगीचे में शैतान ने हव्वा को धोखा दिया था।
हम जो प्रचार करते हैं, उसके बजाय वे दूसरे यीशु का प्रचार कर रहे हैं।
वे बड़ाई करते हैं कि वे यहूदी हैं, वो तो मैं हूँ।
वे कहते हैं कि वे इस्राएली हैं, परमेश्वर के चुने हुए लोग, वो मैं भी हूँ।
वे कहते हैं कि वे मसीह की सेवा करते हैं - लेकिन मैंने उनसे बढ़कर सेवा की है!
मैंने कठिन परिश्रम किया है, बहुत बार बन्दिग्रह में डाला गया, बार-बार कोड़े खाए, और बार-बार मौत के जोखिमों को सहा।
पाँच बार यहूदियों ने मुझे उन्तालीस कोड़े मारे।
तीन बार मुझे डण्डों से पीटा गया। एक बार मुझे पत्थरवाह किया गया।
तीन बार जिस जहाज़ पर मैं सवार था, वह टूट गया। एक बार मैं पूरी रात और दिन खुले समुद्र में था।
मैं बार-बार नदियों के बाढ़ के जोखिमों से और लुटेरों से और अपने ही लोगों से, यहूदियों से, और अन्यजातियों के हाथों से खतरे में रहा हूँ।
मैं भूखा-प्यासा रहा - और ठण्ड से ठिठुरता रहा।
लेकिन अगर मुझे घमण्ड करना होगा, तो मैं उन बातों के विषय में घमण्ड करूँगा जो ये दिखाती हैं कि मैं कितना निर्बल हूँ।

चौदह साल पहले मुझे स्वर्ग तक उठाया गया था, मेरे शरीर सहित या मेरी आत्मा सहित यह मैं नहीं जानता।
स्वर्ग में मैंने इतनी आश्चर्यजनक बातें सुनीं जो वर्णन करने या शब्दों में कहने के लिए एक व्यक्ति की समझने की शक्ति से परे हैं।
वह अनुभव बहुत कुछ घमण्ड करने लायक है, लेकिन मैं ऐसा नहीं करूँगा।
मुझे घमण्ड से फूलने से बचाने के लिए परमेश्वर ने मुझे मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया है, अर्थात शैतान का एक दूत मुझे चोट पहुँचाने और परेशान करने के लिए।
तीन बार मैंने परमेश्वर से इसे दूर करने के लिए विनती की, लेकिन हर बार उसने कहा, "नहीं। लेकिन मैं तेरे साथ हूँ; तेरे लिए मेरा अनुग्रह काफी है। मेरी सामर्थ्य निर्बल लोगों में अच्छी तरह से दिखाई देती है।"
मुझे खेद है कि जब मैं आऊँगा तो परमेश्वर मुझे तुम्हारे सामने नम्र करेगा और मुझे दुखी होना पड़ेगा क्योंकि तुममें से बहुतों ने पहले पाप किया और जो दुष्ट काम किए हैं उनसे मन नहीं फिराया।
खुद को परखो। क्या तुम सचमुच मसीही हो? क्या तुमने परीक्षा उत्तीर्ण की है?
क्या तुम अपने अन्दर मसीह की उपस्थिति और सामर्थ्य को अधिकाधिक महसूस करते हो?
या तुम सिर्फ मसीही होने का नाटक कर रहे हो जबकि वास्तव में तुम बिल्कुल नहीं हो?
हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सभी पर बना रहे।

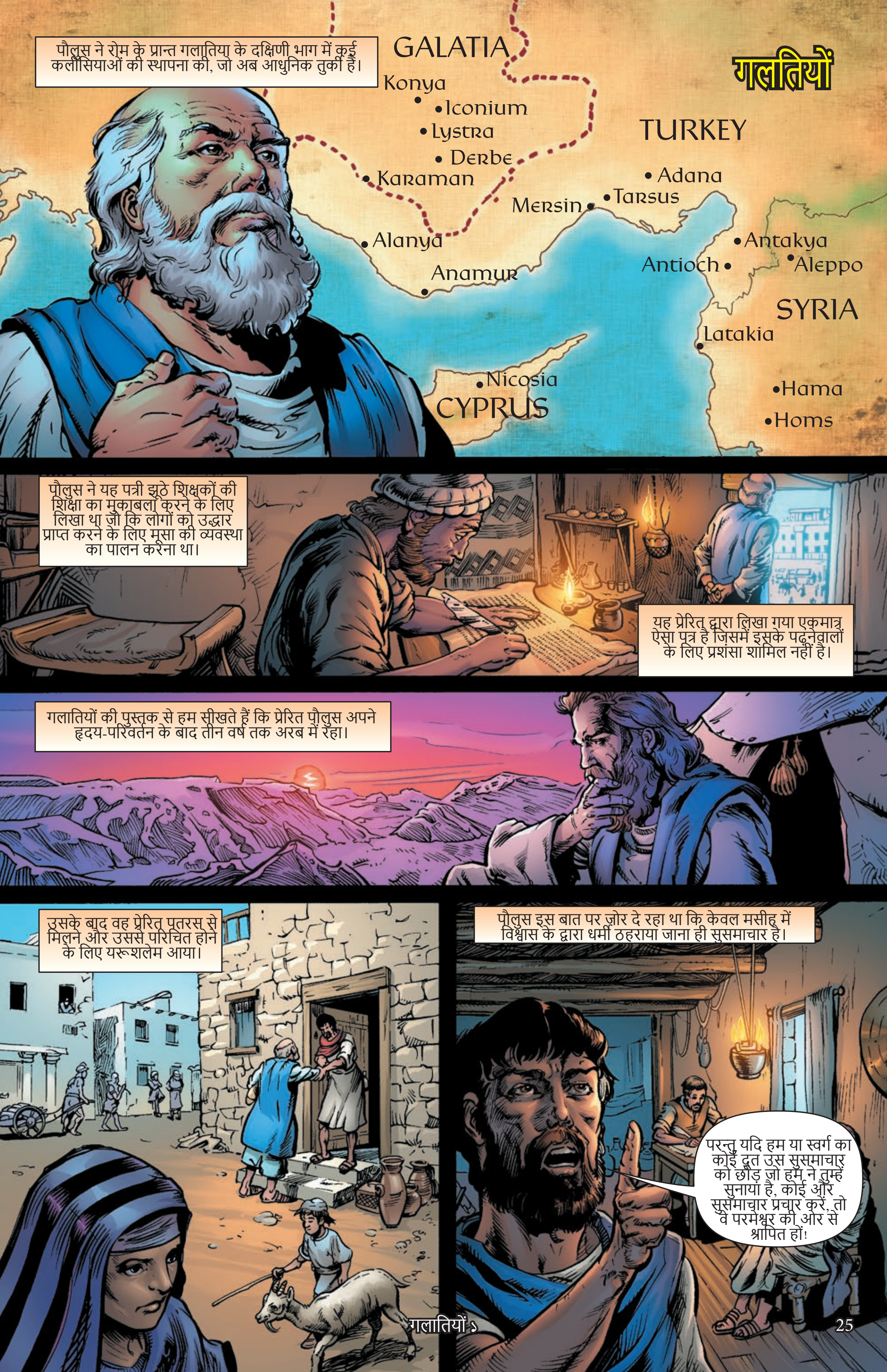
गलतियों
पौलुस ने रोम के प्रान्त गलातिया के दक्षिणी भाग में कई कलीसियाओं की स्थापना की, जो अब आधुनिक तुर्की है।
GALATIA
Konya
Iconium
Lystra
Derbe
Karaman
TURKEY
Adana
Tarsus
Mersin
Alanya
Anamur
Antakya
Antioch
Aleppo
SYRIA
Latakia
Nicosia
CYPRUS
Hama
Homs
पौलुस ने यह पत्री झूठे शिक्षकों की शिक्षा का मुकाबला करने के लिए लिखा था जो कि लोगों को उद्धार प्राप्त करने के लिए मूसा की व्यवस्था का पालन करना था।
यह प्रेरित द्वारा लिखा गया एकमात्र ऐसा पत्र है जिसमें इसके पढ़नेवालों के लिए प्रशंसा शामिल नहीं है।
गलातियों की पुस्तक से हम सीखते हैं कि प्रेरित पौलुस अपने हृदय-परिवर्तन के बाद तीन वर्ष तक अरब में रहा।
उसके बाद वह प्रेरित पतरस से मिलने और उससे परिचित होने के लिए यरूशलेम आया।
पौलुस इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि केवल मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना ही सुसमाचार है।
परन्तु यदि हम या स्वर्ग का कोई दूत उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम्हें सुनाया है, कोई और सुसमाचार प्रचार करें, तो वे परमेश्वर की ओर से श्रापित हों!

पतरस और अन्य लोगों ने माना कि मुझे अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने का कार्य सौंपा गया था - ठीक वैसे ही जैसे पतरस को यहूदियों को सौंपा गया था।
परन्तु जब पतरस अनताकिया में आया, तो मैं ने उसके मुँह पर उसका विरोध किया, क्योंकि यहूदियों के आने पर वह अन्यजातियों के साथ भोजन करने से दूर हो गया।
मैंने उससे कहा,
तू जन्म से यहूदी हैं और यहूदी नियमों का पालन नहीं करता है, तो तू अन्यजातियों को उनका पालन कराने की कोशिश क्यों कर रहा है?
हम यहूदी मसीही जानते हैं कि हम अपने यहूदी नियमों का पालन करके परमेश्वर के साथ सही नहीं हो सकते, सिर्फ यीशु मसीह में विश्वास ही हमारे पापों को दूर कर सकता है।
क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के लिए मर गया हूँ, ताकि मैं परमेश्वर के लिए जीवित रहूँ।
मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित नहीं हूँ, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।
अब मैं शरीर में जो जीवित हूँ, तो मैं परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करने से जीवित हूँ, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए स्वयं को दे दिया।

हे मूर्ख गलातियों! तुमको किसने मोह लिया? तुम्हारी आँखों के सामने ही यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाया हुआ दिखाया गया।
क्या तुम ने आत्मा को व्यवस्था के कामों के द्वारा या सुने हुए सुसमाचार पर विश्वास करने से प्राप्त किया??
आत्मा के द्वारा आरम्भ करने के बाद, क्या अब तुम शरीर की रीति पर अंत करने का प्रयास कर रहे हो?
पवित्रशास्त्र इस समय की प्रतीक्षा करता रहा कि परमेश्वर विश्वास के द्वारा अन्यजातियों का उद्धार करेगा।
परमेश्वर ने अब्राहम से कहा...
मैं हर राष्ट्र में उन लोगों को आशीष दूंगा जो मुझ पर विश्वास करते हैं जैसे कि तू करता है।
और ऐसे ही हैं - वे सभी जो मसीह पर विश्वास करते हैं, वही लोग आशीष प्राप्त करते हैं जैसे कि अब्राहम ने प्राप्त की थी।
यहूदी नियमों का पालन करने की कोशिश करके कोई भी कभी भी परमेश्वर का पक्ष नहीं जीत सकता क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि हम सिर्फ विश्वास से ही उसकी दृष्टि में धर्मी हो सकते हैं।
न यहूदी, न अन्यजाति, न दास, न स्वतन्त्र, न नर और नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

यदि एक पिता मर जाता है और अपने बच्चे के लिए बहुत धन छोड़ देता है, तो वह बच्चा दास से बहतर नहीं है - क्योंकि उसके संरक्षक उसे बताते हैं कि जब तक वह वयस्क नहीं हो जाता तब तक उसे क्या करना चाहिए।
मसीह के आने से पहले हमारे साथ ऐसा ही था - हम यहूदी नियमों के दास थे।
लेकिन सही समय पर परमेश्वर ने अपने पुत्र को, जो यहूदी के रूप में जन्मी एक स्त्री के द्वारा जन्मा, हमारे लिए स्वतंत्रता को मोल लेने के लिए भेजा, जो व्यवस्था के दास थे, ताकि वह हमें अपने पुत्रों के समान अपना सके।
इससे पहले कि तुम अन्यजातियों ने परमेश्वर को जानो, तुम तथाकथित देवताओं के दास थे जिनका अस्तित्व ही नहीं था।
और अब... यह कैसे हो सकता है कि तुम फिर से वापस जाना चाहते हो और परमेश्वर के नियमों का पालन करके स्वर्ग जाने की कोशिश करनेवाले, एक व्यर्थ धर्म के दास बनना चाहते हो?
तुम कुछ दिनों या महीनों या मौसमों या वर्षों में जो कुछ करते हो या नहीं करते हो, उसके द्वारा तुम परमेश्वर के अनुग्रह को पाने की कोशिश कर रहे हो।
मैं तुम्हारे लिए डरता हूँ। मुझे डर है कि तुम्हारे लिए किया हुआ मेरा कठिन परिश्रम बेकार न हो जाए।

मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है इसलिए यहूदी नियमों और संस्कारों के दास मत बनो।
यदि तुम ख़तना पर भरोसा कर रहे हैं और तुम परमेश्वर के साथ सही बने रहने के लिए यहूदी नियमों का पालन कर रहे हो, तो मसीह तुमको नहीं बचा सकता।
पवित्र आत्मा की सहायता से हम अपने पापों को दूर करने और परमेश्वर के द्वारा धर्मी बने रहने के लिए मसीह की मृत्यु पर भरोसा करते हैं।
हमें खतने या यहूदी संस्कारों का पालन करने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है - हमें सिर्फ प्रेम के द्वारा काम करनेवाला विश्वास चाहिए।
तुम मिल-जुलकर रह रहे थे। तुमको सत्य का अनुसरण करने से रोकने के लिए किसने हस्तक्षेप किया है?
यह निश्चित रूप से परमेश्वर नहीं था, क्योंकि उसने तुमको मसीह में स्वतंत्रता के लिए बुलाया है।
तुम्हें गलत काम न करने की स्वतंत्रता दी गई है - बल्कि एक-दूसरे से प्रेम करने और सेवा करने की स्वतंत्रता दी गई है।
क्योंकि सारी व्यवस्था को इस एक आज्ञा में समाप्त किया जा सकता है: "दूसरों से वैसे ही प्रेम करो जैसा तुम स्वयं से प्रेम करते हो।" एक दूसरे का विनाश करने से सावधान रहो।
गलातियों ५

यदि एक मसीही किसी पाप में पकड़ा भी जाए, तो तुम्हें जो आत्मिक हो, धीरे-धीरे से उसे सही रास्ते पर वापस लाने में मदद करनी चाहिए - यह याद रखना कि वह तुम भी हो सकते हो।
एक दूसरे की परेशानियों और दुःखों का भार उठाओ।
याद रखो कि तुम परमेश्वर को न अनदेखा कर सकते हो और ना उससे दूर भाग सकते हो - एक व्यक्ति हमेशा उसी तरह की कटनी काटेगा जैसा वह बोता है!
यदि वह अपने शरीर के लिए बोता है, तो वह बुराई के बीज बोता है, और मृत्यु की कटनी काटेगा - परन्तु यदि वह आत्मा के लिए अच्छी चीजें बोता है, तो वह अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
देखो, मैंने कैसे बड़े अक्षरों में - इन समापन के शब्दों को अपनी लिखावट में लिखा है!
जो खतना के विषय में सिखा रहे हैं वे प्रसिद्ध होना चाहते हैं और मसीह के क्रूस की ओर से आने वाले उत्पीड़न से बचना चाहते हैं।
परमेश्वर न करे कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के सिवा किसी और बात पर घमण्ड करूं।
क्योंकि उस क्रूस की वजह से, दुनिया की सभी आकर्षक वस्तुओं में मेरी दिलचस्पी बहुत पहले ही खत्म हो गई थी।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारा खतना हुआ है या नहीं - क्या मायने रखता है कि क्या हम सचमुच एक नए डील-डौल में परिवर्तित हो गए हैं।

इफिसियों
इफिसुस की कलीसिया को पत्र बहुत समय पहले ६०-६२ ईस्वी के बीच उस समय लिखा गया था, जब पौलुस रोम की जेल में था,
इफिसुस एशिया के रोम प्रान्त (आधुनिक तुर्की) की राजधानी थी।
प्रिस्किल्ला और अक्विला ने संभवतःइस कलीसिया को शुरू किया था और कलीसिया को तीन साल तक पौलुस की अध्यक्षता में चलाया गया था।
इफिसुस के सभी विश्वासियों के लिए, हम किस तरह से परमेश्वर की स्तुति करते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता, जिसने हमें स्वर्ग में हर प्रकार की आशीषों के साथ आशीषित किया है क्योंकि हम मसीह से सम्बंध रखते हैं।
यह पत्री विश्वासियों को यीशु मसीह में उनके पास मौजूद असीम आशीषों की याद दिलाने के लिए था - और उन आशीषों के बदले में कैसे जीना है।
यह पत्री उस महान रहस्य की भी व्याख्या करती है - कि गैर-यहूदी विश्वासी भी मसीह में इन आशीषों के उत्तराधिकारी थे।
पौलुस की ओर से एक पत्री...
जब से मैंने तुम्हारे विश्वास के बारे में सुना है, मैंने तुम्हारे लिए धन्यवाद देना बंद नहीं किया है।
इफिसियों १:१-१६

इफिसुस के एक मधुशाला में दो आदमी उनके बीच एक वेश्या के साथ चल रहे है।
पहले जब तुम शैतान का अनुसरण करते हुए अपने पापों के श्राप के कारण परमेश्वर के अधीन थे।
हम सब भी ऐसे ही हुआ करते थे, हर उस दुष्ट काम को करते थे जिनमें हमारी बुरी वासनाए हमें ले जाती है।
परन्तु परमेश्वर, जो दया का अति धनी है, उसने हम से तब भी प्रेम किया, जब हम अपने पापों के कारण मरे हुए थे।
तुम पहले अन्यजाति थे और यहूदियों द्वारा “अशुद्ध” कहलाते थे।
परन्तु अब तुम मसीह यीशु के पास आ गये हो, जिस ने यहूदियों और अन्यजातियों को एक परिवार बनाया है।
तुम प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नीव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, खड़े किये गए हो।
हम परमेश्वर के लिए एक सुंदर, प्रगतिशील मंदिर बनने के लिए मसीह के साथ जुड़ते जा रहे हैं।

मैं, पौलुस, मसीह का सेवक, यहाँ यह प्रचार करने के लिए जेल में हूँ कि तुम अन्यजाति परमेश्वर के घर का हिस्सा हो।
और यह परमेश्वर का रहस्य है - कि परमेश्वर के पुत्रों को विरासत में मिली सारी संपत्ति में अन्यजातियों का यहूदियों के साथ पूरा-पूरा हिस्सा हो; दोनों को उसकी कलीसिया का सदस्य होने के लिए आमंत्रित किया जाता है।
उसका प्रयोजन था कि वह प्रधान अधिकारियों पर अपना ज्ञान प्रकट करे जो स्वर्गीय स्थानों पर हैं - यहूदी और अन्यजाति समान रूप से उसकी कलीसिया में एक साथ शामिल हुए।
जब मैं उसकी योजना के ज्ञान के बारे में सोचता हूँ, तो मैं अपने घुटनों के बल गिर जाता हूँ और पिता से प्रार्थना करता हूँ कि वह अपने महिमा के धन में से तुमको अपनी पवित्र आत्मा की शक्तिशाली सामर्थ्य प्रदान करेगा।
परमेश्वर की महिमा हो, जो हमारी सोच से अधिक कार्य करने में सामर्थी है, हम कभी सोचने या कल्पना करने की हिम्मत भी नहीं कर सकते हैं।
यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार की उसकी महान योजना के कारण से उसी की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे।
इफिसियों ३

मैं तुमसे विनती करता हूँ जैसा कि मैं यहाँ जेल में प्रभु की सेवा करने के लिए हूँ ु उन लोगों के योग्य जीवन जीने और कार्य करने के लिए जिन्हें इस तरह की आशीषों के लिए चुना गया है।
दीन और नम्र बनें, एक दूसरे के प्रति सहनशील बनें।
हम सभी एक ही देह के अंग हैं और हम सभी को एक ही आनंददायक भविष्य के लिए बुलाया गया है।
परन्तु हम में से प्रत्येक को अनुग्रह दिया गया है, जैसा कि मसीह ने देने का निश्चय किया था।
उसने कुछ को प्रेरित होने के लिए, कुछ को अच्छा उपदेश देनेवाला, कुछ को सुसमाचार प्रचारक होने के लिए, और कुछ को अध्यक्ष और शिक्षक बनने के लिए दिया ताकि वे परमेश्वर के लोगों को सेवा के लिए तैयार कर सकें।
सूर्य के अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे ुउस पर शीघ्रता से काबू पाओ ताकि शैतान को पैर जमाने का अवसर न मिले।
एक दूसरे से झूठ बोलना बंद करो। अगर कोई चोरी करता है तो उसे चोरी करना बंद करना चाहिए और अपने हाथों का इस्तेमाल ईमानदारी से कार्य करने और दूसरों की मदद करने के लिए करना चाहिए।
स्वार्थी, बुरे स्वभाव वाले और क्रोधित होना बंद करो।
इसके बजाय, एक दूसरे के प्रति दयालु बनो, एक दूसरे को क्षमा करनेवाले बनो, जैसे परमेश्वर ने तुमको क्षमा किया है क्योंकि तुम अब मसीह के समीप आ गए हो।

तुम्हारे बीच में व्यभिचार, अशुद्धता, लालच, या गंदी बातें न हो - इसके बजाय धन्यवाद ही सुना जाए।
बिना सोचे-समझे कार्य न करो, बल्कि यह पता लगाने की कोशिश करो और वही करो जो प्रभु तुमसे चाहता है।
बहुत अधिक शराब न पिओ, बल्कि पवित्र आत्मा से भरे रहो।
प्रभु के बारे में एक दूसरे के साथ बात करो और अपने मनों में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो - हमेशा हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में हमारे परमेश्वर और पिता को हर बात के लिए धन्यवाद देते रहो।
मसीह का आदर करते हुए एक दूसरे के प्रति अधीन रहो।
हे पत्नियों तुम्हें अपने पति के नेतृत्व का सम्मान उसी तरह करना चाहिए जैसे तुम प्रभु के अधीन रहती हो।
और हे पतियों, तुम भी अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम रखो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया यहाँ तक कि वह उसके लिए मर भी गया।
एक पुरुष को अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम करना चाहिए; और पत्नी के लिए भी यह उचित है कि वह अपने पति का आदर और सम्मान करे।
इफिसियों ५

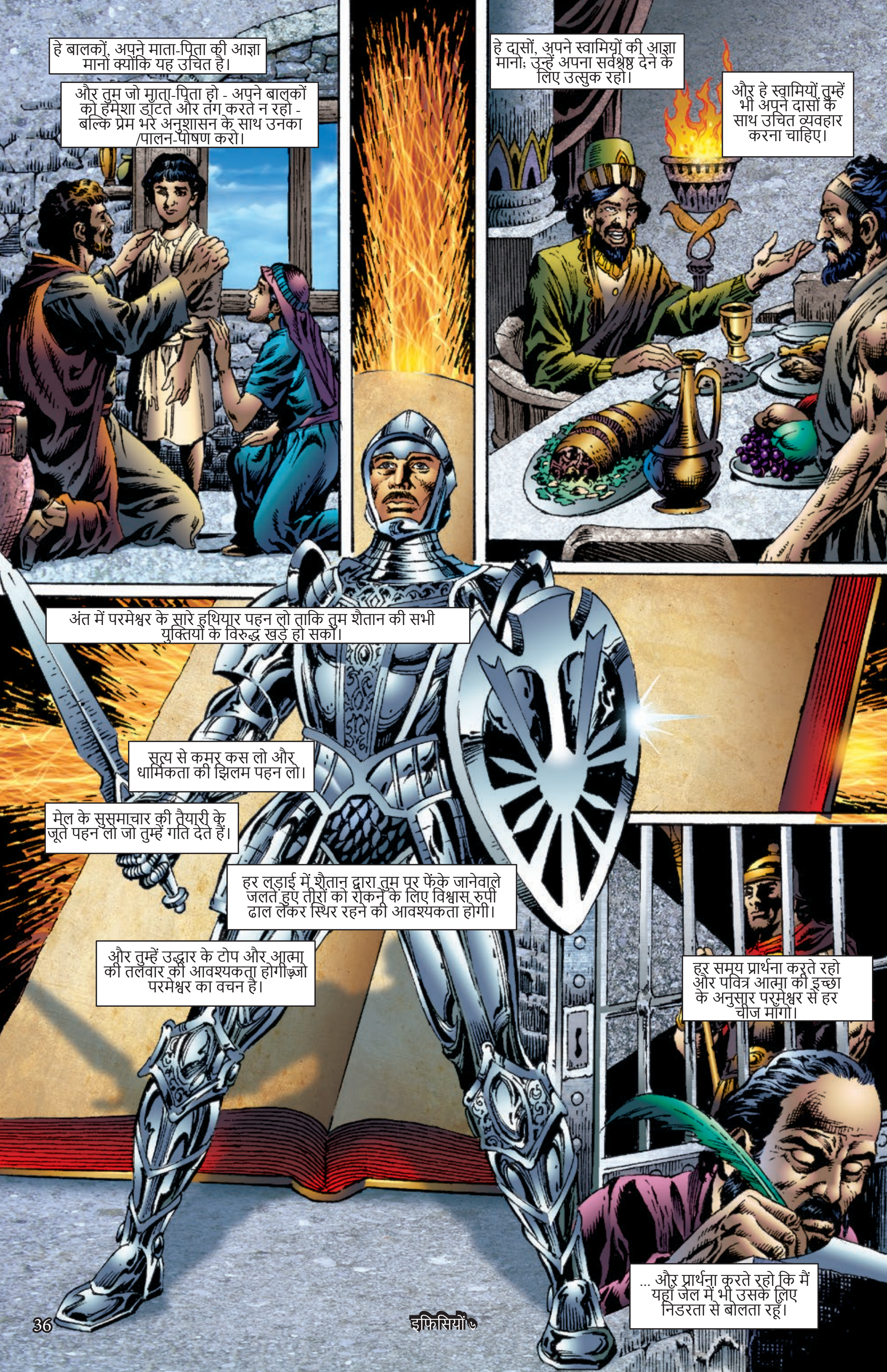
हे बालकों, अपने माता-पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह उचित है।
और तुम जो माता-पिता हो - अपने बालकों को हमेशा डाँटते और तंग करते न रहो - बल्कि प्रेम भरे अनुशासन के साथ उनका /पालन-पोषण करो।
हे दासों, अपने स्वामियों की आज्ञा मानो; उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए उत्सुक रहो।
और हे स्वामियों तुम्हें भी अपने दासों के साथ उचित व्यवहार करना चाहिए।
अंत में परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो ताकि तुम शैतान की सभी युक्तियों के विरुद्ध खड़े हो सको।
सत्य से कमर कस लो और धार्मिकता की झिलम पहन लो।
मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन लो जो तुम्हें गति देते हैं।
हर लड़ाई में शैतान द्वारा तुम पर फेंके जानेवाले जलते हुए तीरों को रोकने के लिए विश्वास रुपी ढाल लेकर स्थिर रहने की आवश्यकता होगी।
और तुम्हें उद्धार के टोप और आत्मा की तलवार की आवश्यकता होगीज्जो परमेश्वर का वचन है।
हर समय प्रार्थना करते रहो और पवित्र आत्मा की इच्छा के अनुसार परमेश्वर से हर चीज माँगो।
... और प्रार्थना करते रहो कि मैं यहाँ जेल में भी उसके लिए निडरता से बोलता रहूँ।

"THE BIBLE EXPLAINED
IN EVERY LANGUAGE."

SUPERBIBLE.TV